

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

TYPES OF THINKING

चिंतन एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। यह कई प्रकार के होते हैं जो निम्न है-

1. आत्म चिंतन- आत्म चिंतन का तात्पर्य उस चिंतन से है जिससे व्यक्ति अपने भविष्य के संबंध में सोच विचार करता है, जो वास्तव में कल्पना पर आधारित होता है। रेबर तथा रेबर के अनुसार अपने आप में निहित हो जाने की प्रवृत्ति को ही आत्म चिंतन कहते हैं। इस तरह के चिंतन का संबंध सामान्यतः यर्थाथता से नहीं होता है।

2. अभिसारी चिंतन- यह चिंतन वास्तव मे यथार्थवादी चिंतन का प्रकार है। इसकी विशेषता यह है कि इसमे व्यक्ति किसी समस्या के संबंध मे परम्परावादी ढंग से चिंतन करता है। इस तरह के चिंतन के ढंग मे कीड़ नविता नही होती है। यदि कोइ व्यक्ति यह चिंतन करा कि एक बैलगाडी पर चार व्यकयति बैठे है और उस बैलगाडी को दो बैल उसे खिच रहा है तो इसे अभिसारी किंतन कहेंगे।
3. अपसारी चिंतन- यह चिंतन वास्तव में अभिसारी चिंतन के विपरीत है। इस तरह के चिंतन में व्यक्ति किसी चीज का आविष्कार करता है अथवा किसी समस्या का समाधान नए ढंग से करता है। इस तरह के चिंतन में नवीनता या अपूर्वता का गुण पाया जाता है। यदि कोई व्यक्ति एक बैलगाड़ी को देखकर यह कहे कि इस बैलगाड़ी को दो व्यक्ति खिच रहा है और इस पर 4 बैल बैठा हुआ

है तो यह अपूर्व चिंतन अपसारी चिंतन कहलाएगा।
इस चिंतन को सर्जनात्मक चिंतन भी कहते हैं।

4. विवेचित चिंतन- इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति अपने द्वारा किए गए कार्य या किसी समस्या के समाधान में बार-बार चेकिंग करता है तथा कोई त्रुटि या दोष नजर आता है तो उसको दूर करता है। रेबर तथा रेवर ने कहा है कि यह चिंतन सर्जनात्मक चिंतन के उल्टा होता है। कारण, सर्जनात्मक चिंतन में व्यक्ति किसी नई चीज का निर्माण करता है तथा किसी समस्या का समाधान नए तरीके से करता है। जबकि विवेचित चिंतन में व्यक्ति समस्या के पुराने समाधान का ही आकलन करता है।

5. प्रकार चिंतन- रेवर तथा रेवर के अनुसार प्रकार चिंतन का तात्पर्य युंग द्वारा प्रस्तुत एक व्यक्तित्व प्रकार से है, जिसको कार्य प्रकार कहते हैं। युंग ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण चार कार्यों-

भाव, चिंतन, संवेदन तथा अंतर्ज्ञान के आधार पर किया। भाव तथा चिंतन को विवेकी चिंतन माना परंतु संवेदन तथा अंतर्ज्ञान को अविवेकी माना। सभी व्यक्तियों ये चारों कार्य उपलब्ध होते हैं, परंतु उनका प्रकार वही माना जाता है जो कार्य उनमें अधिक प्रबल होता है।